क्यों हुई न्यूटन की मौत?!!!!!!!!!!!!!!!!

एक बार की बात है। न्यूटन भारत आया और सीधा दक्षिण की ओर चल दिया। उसने तमिल फिल्मों के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। उसने फिल्में देखीं तो लगा उसका सिर चकराने। बाप रे! इतने सारे साल उसने भौतिक शास्त्र के नियम खोजने में यूँ ही गँवा दिए। बेकार का कचरा थे वो! उसको अपने किए पर शर्मिन्दगी होने लगी।

रजनीकान्त की एक फिल्म ने तो उसे इतना चकरा दिया कि वो पागल ही हो गया। फिल्म के कुछ सीन हैं-

1. रजनीकान्त को दिमाग का कैंसर है। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया है कि अब इसका कोई इलाज नहीं है। उसकी मौत अब दूर नहीं है। लेकिन तभी हमारे महान रजनीकान्त गुण्डों से जा भिड़ते हैं। गुण्डे की एक गोली सीधे उनके दिमाग में लगती है। सभी दर्शक अपनी सीटों से चिपके बैठे हैं। अब क्या होगा? होगा क्या? गोली सीधे उसके कान से निकलती है और उसके साथ कैंसर की गाँठ भी निकल जाती है। रजनीकान्त भले-चंगे हो जाते हैं! रजनीकान्त अमर रहें!

2. रजनीकान्त की तीन गुण्डों से भिड़ंत होती है। रजनीकान्त के पास बन्दूक तो है पर उसमें केवल एक गोली है। हाँ, एक चाकू भी है उनके पास। और सोचो वो क्या करते हैं? वो बीचवाले गुण्डे की तरफ चाकू फेंकते हैं और फिर चाकू पर गोली चलाते हैं। इस तरह कि गोली के दो टुकड़े हो जाते हैं और आसपास के दोनों गुण्डे गोली लगने से मारे जाते हैं। बीच वाला गुण्डा चाकू के वार से खत्म हो जाता है।

3. रजनीकान्त के पीछे एक गुण्डा लगा हुआ है। पर हाय री किस्मत! हमारे हीरो के पास बन्दूक तो है पर गोली नहीं। तो सोचो कि वो क्या करता है? हमारे तो बूते से भी बाहर है वो सोचना! वो गुण्डे द्वारा गोली चलाने का इन्तज़ार करता है। गुण्डे के गोली चलाते ही रजनीकान्त अपनी बन्दूक को खोल देता है। गोली उसमें आकर फँस जाती है। रजनीकान्त बन्दूक बन्द कर लेता है और गोली चलाता है। धाँय धाँय धाँय ... और गुण्डा मारा जाता है...

न्यूटन पूरी तरह हिल गया था। उसने तय कर लिया कि वो वापस चला जाएगा। लेकिन जाने से पहले उसने सोचा कि चलो आखरी एक फिल्म भी देख ली जाए। क्या पता उसकी इस फिल्म में उसके भौतिकी के नियम सही बैठते हों! और क्या कमाल कि फिल्म में कुछ भी ऐसा नहीं हुआ कि न्यूटन को लगता कि दुनिया ही उलट गई है। फिल्म में सब कुछ भौतिकी के नियम-कायदे के अनुसार हो रहा था। न्यूटन पूरी तरह से सन्तुष्ट होकर फिल्म का अन्त देखने लगे। एक बड़ी ऊँची दीवार है। उसके एक ओर रजनीकान्त खड़ा है। उसे पता है कि खलनायक दीवार के दूसरी तरफ है। दीवार इतनी ऊँची है कि उसे लाँघना सम्भव नहीं। अब खलनायक को तो मारना ही है – फिल्म का अन्त जो आ गया है।

(न्यूटन दादा, मुस्कुरा रहे हैं। क्योंकि वे जानते थे कि यह तो सम्भव ही नहीं है।)

अचानक रजनीकान्त अपनी जेब से दो बन्दूकें निकालते हैं। और एक को हवा में उछाल देते हैं। जैसे ही बन्दूक दीवार से भी ऊपर पहुँचती है, वह दूसरी बन्दूक से गोली दागते हैं। गोली पहली बन्दूक के घोड़े से जा टकराती है। और पहली बन्दूक से एक गोली दनदनाते हुए निकलती है जो खलनायक के सीने के आरपार हो जाती है।

इधर खलनायक गोली से मारा जाता है...

और उधर न्यूटन ....!!!!!!!!!!!!!!

कथा: साभार इंटरनेट

चित्र: कनक